केस स्टडी

नंबर 4

कम पढ़ी लिखी हूँ तो क्या हुआ जीरो नहीं हूँ

नामः कालो देवी

उम्रः 32 वर्ष

शिक्षाः 7वीं पास

मुखियाः 2015 से

अनुभवः वार्ड सदस्य 2010–15

ग्राम पंचायतः नवागढ़

पंचायत समितिः लातेहार सदर

जिलाः लातेहार

राज्यः झारखण्ड

नवागढ़ ग्राम पंचायत की मुखिया कालो देवी को देर शाम के समय ग्राम पंचायत भवन में अकेले बैठ कर भी लोगों से मिलते देखकर किसी को भी सुखद आश्चर्य हो सकता है। कालो देवी से बात करके लगता है कि उनके पास अपने ग्राम पंचायत में काम करने के लिये एक विचार है जिसे लोगों के सहयोग के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। कालो देवी में इच्छा शक्ति भी है और यही कारण है कि वह देर शाम तक भी ग्राम पंचायत के कामों में व्यस्त रहती हैं। बात–चीत करते हुये कालो देवी बताती हैं कि शाम के समय ग्राम पंचायत के अन्य सदस्य उनके साथ पूरा समय नहीं दे पाते हैं किन्तु अक्सर उनके पति उनके साथ बैठते हैं। एक अच्छी माँ के रूप में वह अपने बच्चों के लिये अच्छी शिक्षा के बारे में भी सोचती हैं इसलिये उन्होंने अपने बच्चों को एक हॉस्टल में रखा है।

सामाजिक रूप से एक पिछड़े परिवार से होने और कम पढ़ पाने के बाद भी कालो देवी अपने सपने को छोड़ना नहीं चाहती हैं। यही कारण है कि दिहाड़ी पर काम करने वाली कालो देवी पहले वार्ड मेंबर के रूप में ग्राम पंचायत से जुड़ीं और अब मुखिया के रूप में ग्राम पंचायत में काम कर रही हैं। कालो देवी बताती है कि जब 2010 में वह पहली बार ग्राम पंचायत के लिये हुये चुनाव में वार्ड मेंबर के रूप में चुनी गयीं तो उन्होंने कुछ काम करने का प्रयास किया। इसी दौरान उन्हें लगा कि क्योंकि मुखिया के पास ज्यादा 'पावर' होता है अतः ग्राम पंचायत की मुखिया बनकर वह और अच्छा काम कर सकती हैं। उसके बाद 'गाँव वालों ने सहयोग दिया' और कालो देवी मुखिया बन गयी।

कालो देवी एक मुखिया के रूप में अपने काम को लेकर बहुत जागरूक हैं। विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं के टीकाकरण, आँगनबाड़ी में पोषाहार, स्कूलों में मध्यान्ह भोजन और ड्रॉप आउट जैसे मामलों पर उनकी विशेष निगाह होती है। इसी प्रकार महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना और पंचायत फंड के माध्यम से होने वाले विकास के कामों की जानकारी भी वह अक्सर लेती रहती हैं। गाँव के सभी लोगों को जाति प्रमाण–पत्र और जन्म या मृत्यु प्रमाण–पत्र भी उनकी देख–रेख में तुरंत दिया जाता है। कालो देवी बताती हैं कि ग्राम पंचायत में सभी के विकास के लिये ग्राम सभा की बैठक बुलाकर ग्राम पंचायत डेवलपमेन्ट प्लान बनवाने की पूरी जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं उठायी। उनके अनुसार अपने गाँव में जरूरत के अनुसार आंगनबा. ड़ियों का निर्माण कराना उनकी प्राथमिकता में शामिल है। हालांकि कालो देवी से बात करके लगा कि योजन के निर्माण में उन्हें लोगों का सहयोग नहीं मिला और उनकी सव्यं की समझ योजना निर्माण या ग्राम पंचायत डेवलपमेन्ट प्लान पर कम है।

कालो देवी बताती हैं कि वार्ड मेंबर के रूप में उन्हें कोई प्रशिक्षण नहीं मिला था लेकिन मुखिया बनने के बाद उन्हें अपने कामों के बारे में जानकारी देने के संबंध में तीन दिन का प्रशिक्षण विकास भारती के द्वारा दिया गया है। उस प्रशिक्षण के आधार पर खालो देवी अपने ग्राम पंचायत मे काम करवा रहीं हैं।

अपनी चुनौतियों को बताते हुये कालो देवी बताती हैं कि उन्हें सबसे अधिक डर किसी कागज पर साइन करते हुये लगता है। हालांकि वह यह भी कहती हैं कि इससे उनका विश्वास कभी कम नहीं हुआ है लेकिन थोड़ा और पढ़े होने से विश्वास और बढ़ जाता है। कालो देवी कहती हैं कि 'मैं कम लिखी हूँ तो क्या हुआ जीरो नहीं हूँ' इससे उनका आत्म विश्वास साफ दिखायी देता है। यह पूछने पर कि कम पढ़ी–लिखी होने के बाद वह अपने पंचायत में काम कैसे करती हैं तो वह बताती है कि पंचायत सेवक उनके सलाह से लिखने–पढ़ने का सारा काम करते हैं।

कालो देवी कहती हैं कि महिला होने के नाते उन्हें किसी प्रकार के भेद–भाव का सामना तो नहीं करना पड़ता है पर कुछ दिक्कतें तो सभी महिलाओं को होती हैं। कालो देवी का मानना है कि ग्राम पंचायत में काम करने के हिसाब से अगर उनकी क्षमता को बढ़ाने का प्रयास किया जाय तो उनके लिये अच्छा होगा और वह अपना काम और बेहतर ढ़ंग से कर पायेंगी।